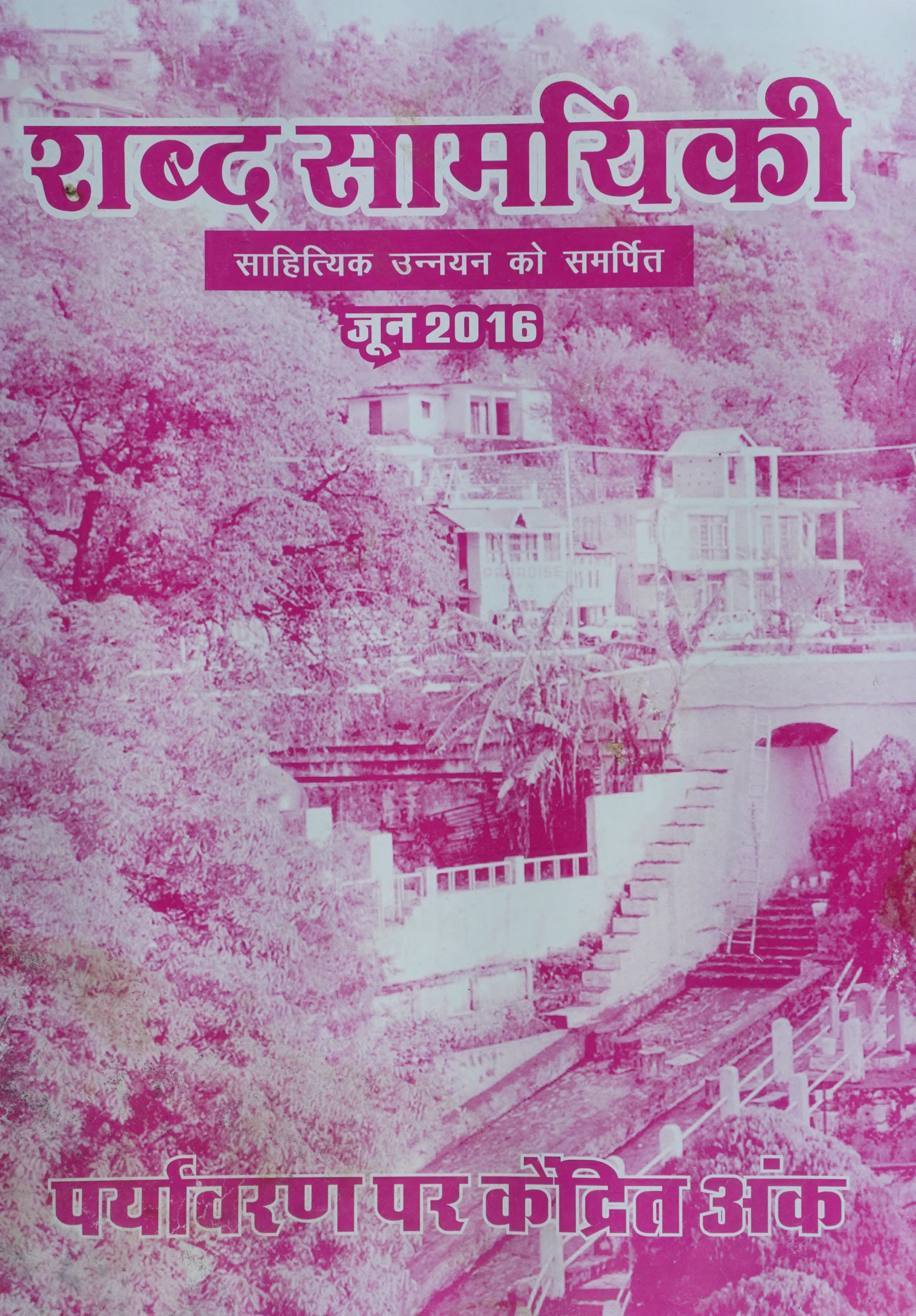
शब्द सामयिकी

साहित्यिक उन्नयन को समर्पित

जून 2016



पर्यावरण पर केंद्रित अंक

साहित्यिक उन्नयन को समर्पित संस्था

सामयिकी की कार्यकारिणी वर्ष 2016–17

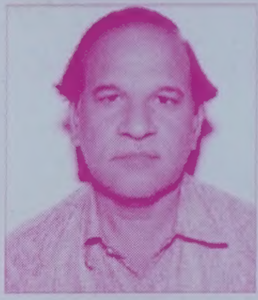

नियामक
वंशीलाल पारस


अध्यक्ष
श्यामसुंदर सुमन


वरिष्ठ उपाध्यक्ष
रविन्द्र जैन


उपाध्यक्ष
एस.के. लोहानी 'खालिस'


उपाध्यक्ष
अरुण अजीब


उपाध्यक्ष
प्रहलाद पारीक


प्रधान सचिव
ओम उज्ज्वल


सचिव
रेखा लोढ़ा स्मित


सचिव
मनोहर चडांलिया


सचिव
श्यामसुंदर 'मधुप'


सचिव
चिरंजीलाल देशप्रेमी


सचिव
डॉ. राजमति सुराणा


संगठन सचिव
पवन गग्गड़


संगठन सचिव
सुधा तिवाड़ी 'सखी'


संगठन सचिव
नरेन्द्र वर्मा


कोषाध्यक्ष
देवीलाल दुलारा


प्रचार प्रसार सचिव
रामप्रसाद भदादा


सह सचिव
श्रीमती शकुंतला 'शकुन'


सह सचिव
राजकुमार राज


सह सचिव
रामचन्द्र मून्दड़ा


कार्यकारिणी सदस्य
योगेश सक्सेना 'योगी'


कार्यकारिणी सदस्य
गुलाबचंद मीरचंदानी


कार्यकारिणी सदस्य
गोपाल पंचोली 'आशु'


कार्यकारिणी सदस्य
पुनीता भारद्वाज


मुख्य परामर्शक
डॉ. भैरुंलाल गर्ग


परामर्शक
फतहसिंह लोढ़ा


परामर्शक
दीपक अग्रवाल


परामर्शक
अवधेशकुमार जौहरी


परामर्शक
जगदीशचन्द्र मून्दड़ा

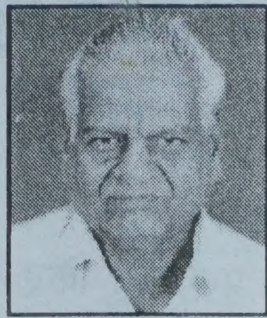

परामर्शक
डॉ. एस.पी. भट्टाचार्य

शब्द सामयिकी

साहित्यिक उन्नयन को समर्पित

जून 2015

आजीवन सदस्यता 1000/– रू.
2 वर्ष की सदस्यता 200/– रू.
6 वर्ष की सदस्यता 500/– रू.



सम्पादकीय

पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ परि+आवरण है अर्थात् जहां हम रहते है, उसके आसपास का वातावरण ही पर्यावरण है। हमारी भौगोलिक संरचना में परिवर्तन आया है तथा पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुंचा है। आज कही भूकंप, कहीं बाढ़, कहीं तूफान, यह सब इसी परिस्थितिकीय परिवर्तन का कारण है। हमने धरती का अधाधुंध दोहन कर इसे खोखला कर दिया है। समूचा पर्यावरण बुरी तरह दुषित है। शुद्धता के नाम पर आज हम जो अन्न,जल एवं वायु ग्रहण कर रहे है, उसमें भी विष घुला हुआ है। यदि हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखना चाहते है तो घरती का अंधाधुंध दोहन बंद करना होगा।

हमारे प्राचीन साहित्य में वृक्षारोपण को बल दिया गया है। वृक्षों से वायु शुद्ध होती है और पर्यावरण का संतुलन सही बना रहता है। मत्स्य पुराण में 'दशपुत्र समोद्रुभः' कह कर वृक्षों का महत्व बताया गया है। दशपुत्रसमोद्रुमः का मतलब है, एक वृक्ष दस पुत्रों के समान है।

वेदों में पर्वत, जल, वायु, वर्षा, और अग्नि को पर्यावरण का शोषक कहा है। अथर्ववेद में वायु को विश्व भेषज कहा गया है, यानि की वर्ल्ड डॉक्टर। अथर्ववेद शुद्धवायु को औषधि मानता है। ताजी हवा शरीर में प्रवेश करते ही हम तरोताजा हो जाते है।

पर्यावरण हो शुद्ध, पेड़ लगाये,
शुद्ध हवा मिलती रहे, पेड़ लगाये।
बरसेगा खूब पानी, पेड़ अधिक लगाये,
पानी से आप सब, अच्छी राहत पाये।।

–श्यामसुंदर गर्ग

अभिमत

नवम्बर 2015 शब्द सामयिकी का अंक मिला। लघुकलेवरा पत्रिका में आपने अपने कुशल सम्पादन में अच्छी लघुकथाएं, कविताएं एवं आलेख प्रकाशित किए हैं। यह दीपोत्सव विशेषांक पठनीय एवं सग्रहणीय है–शुभकामनाओं सहित

आचार्य सूर्यप्रसाद शर्मा,'निशिहर', रायबरेली

पत्रिका के सभी अंक यथा समय प्राप्त हो रहे हैं। लघुकथा पर आधारित विशेषांक मार्च 2016 में अनेक लघुकथाएं फूलों की खुशबू बिखेरती पंखुरियों के रूप में तन–मन को उल्लासित कर गयीं। संपादकीय बेहद सारगर्भित रहा। लघुकथा विधा पर अच्छे लेख विद्वत लेखकों के पढ़ने को मिले। सभी लघुकथाएं अच्छी रहीं। पूर्णिमा मिश्रा जी की लघुकथा पित्रदोष, प्रो. श्याम लाल कौशल जी की 'गृह प्रवेश' तथा प्रो. अंजना गर्ग की 'वहम', तथा दीप्ति रानी की 'सहारा लाठी का' संवेदित कर गयीं। आनंद दीवान जी की कविता 'बदलेगा... सब बदलेगा' तथा मुराद मेवाड़ी जी का 'कथा गीत' सुनीता शर्मा जी की कविता 'बसंत अलबेली' खास पसंद आये–धन्यवाद!

डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव,रावतभाटा वाया कोटा

आप द्वारा प्रेषित 'शब्द सामयिकी' का मार्च 2016 अंक मिला। अच्छा लगा। आजकल लघुकथाओं की पसंद और लेखन की वृद्धि हुई है। लघुकथा ही क्यों काव्य में–क्षणिकायें, हाइकु ज्यादा प्रसिद्धि पा रहे है। ऐसा इसलिये आजकल में जब भी परिवर्तन/बदलाव आदि चाहता है तो लघुकथा, क्षणिकाये हाइकु पढ़कर झटपट मनोरंजन कर फ्रेश हो जाता है।

रितेंद्र अग्रवाल, जयपुर–302017

दुबली–पतली पत्रिका 'शब्द सामयिकी' में दीपावली से संबंधित कविताएं व आलेख, लघुकथाएं, गजल, क्षणिका, मुक्तक, हाइकू आदि बहुत ही दमदार रचनाएं प्रकाशित की है आपने। इसके लिए बधाई स्वीकारें।लघुकथा, 'सदा ऐसी ही रहना.....' बहुत प्रेरक है। कविता 'यही बहुत है....' की जितनी तारीफ की जाए कम है। समाचार, पढ़ने से उपयोगी जानकारी मिली। पत्रिका की पूरी टीम ही बधाई की पात्र है।

सावित्री चौधरी, जयपुर

छोटी सी अच्छी पत्रिका है। सुंदर रचना चयन है। गेटअप भी अच्छा है। शुभकामनाओं सहित!

लक्ष्मी रूपल,जीरकपुर

पत्रिका 'शब्द सामयिकी' का मार्च–2016 का अंक मिला, धन्यवाद। पत्रिका का यह लघुकथा विशेषांक अच्छा लगा। आज किसी के पास समय नहीं है। ऐसे में लघुकथा–लेखन विधा और भी महत्वपूर्ण बन जाती है। पत्रिका में प्रकाशित शकुंतला अग्रवाल 'शकुन' की 'नसीब', डॉ. कुंवर प्रेमिलनी की 'दावतें', डॉ. अंजना गर्ग की लघुकथा 'वहम' विशेषतौर पर पसंद आई'। सुकीर्ति भटनागर की कविता 'धरती का स्वर्ग' डॉ. ललित फारक्या 'पार्थ' की कविता 'सभा' काबिले तारीफ है। साहित्य समाचार रूचिकर लगे।

प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक

आपके द्वारा प्रेषित 'शब्द–सामयिकी' का लघुकथा पर केंद्रित अंक मार्च 2016 का प्राप्त हुआ। अपनी लघुकथा छपी देखकर प्रसन्नता हुई–आपका–शुक्रिया शुभकामनाओं सहित–

माताप्रसाद शुक्ल,(म.प्र.)

शब्द सामयिकी मार्च 2016 की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद! मेरी रचनाओं को स्थान देने के लिए भी धन्यवाद–शुभ कामनाएं,

डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा ग्वालियर (म.प्र.)

बालसाहित्य पर आधारित आपकी पत्रिका 'शब्दसामयिकी' में बड़े–बड़े लेखकों की साहित्यिक रचनाओं को पढ़ा। साहित्यिक उन्नयन में आपका चिंतन एवं प्रयास बहुत ही सराहनीय है। 'शब्द सामयिकी में राजकुमार 'राजन' का साक्षात्कार पढ़ा, बहुत प्रेरक लगा। बचपन में चोरी की रचनाएं प्रकाशित होते–होते एक बड़ा लेखन करना एवं लेखन की गहरी मौलिकता में उतरना वास्तव में प्रशंसनीय है। बालसाहित्य के विकास एवं समृद्धि में प्रयासरत 'शब्दसामयिकी' के लिए मैं इतना ही कह सकता हूं कि "हाथ कंगन को आरसी क्या!" संपादक

मण्डल सहित 'शब्द सामयिकी' से सरोकार रखने वाले सभी लेखकों एवं पाठकों को नमस्कार।

जगदीशसिंह राव 'विश्वासलोक',
फतहनगर, (उदयपुर)

शब्द सामयिकी का मार्च 2016 अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद। साहित्यिक उन्नयन को समर्पित लघुकथा पर केंद्रित अंक साहित्य प्रेमियों को एक नया दिशा देगा, ऐसा मेरा विश्वास है। संक्षित किंतु सारगर्भित संपादकीय के साथ ही सत्यनारायण 'सत्य' तथा आचार्य सूर्यप्रसाद शर्मा द्वारा रचित 'सम्मान' एवं 'फर्जी मतदाता' लघुकथाएं समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की पोल खोलती है--उज्जवल भविष्य हेतु बहुत--बहुत शुभकामनाएं।

दीप्ति रानी सेन 'दीप'

शब्द सामयिकी का मार्च 2016 का अंक मिला। आभार! पत्रिका अच्छी बन पड़ी है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए आपको साधुवाद।

अंशुमान खरे

प्रथम तो आपको विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ गांधीनगर (बिहार) से साहित्य शिरोमणि की उपाधि के लिए हार्दिक बधाई।

आप द्वारा प्रेषित मार्च--16 लघुकथा पर केंद्रित अंक प्राप्त हुआ। इस अंक की सारी लघुकथाएं एक से बढ़कर एक है। पर 'ईस्टर' 'खराबी फिर पैदा हो जाएगी', रामप्रवेश रजक की 'आधुनिक बेटा', शारदा गुप्ता की 'बहु बेटी', सुरेश शर्मा की 'श्रवणकुमार'' तथा सत्यनारायण सत्य की ''सम्मान'' हृदयस्पर्शी लघुकथाएं हैं।

पवन पहाडिया, पो. डेह, जिला--नागौर

पत्रिका का मार्च 2016 का अंक यथा समय मिला। आकर्षक कवर के चारो पृष्ठ मुखपृष्ठ प्राकृतिक छवि दर्शाता हुआ।

'खैर कुछ लघुकथाऐं तो मन को झकझोरती है, जैसे 'मदद', 'आधुनिक बेटा', 'कौन', 'श्रवण कुमार'। आपने मेरे द्वारा प्रेषित गजल को प्रकाशित कर सम्मान दिया, उसके लिए आपका आभार। **--कवि प्रकाश शर्मा**

> हर बरसगांठ पर करना ऐसा काम।
> रोपना तुम हर बरस, पीपल, नीम और आम।।

कविताएं

प्रदूषण मुक्त देश

सुनीता शर्मा

प्रदूषण--मुक्त हो देश हमारा।
वृक्षारोपण हो धर्म हमारा।
भाई--बंधु, मित्रवर मिल--जुल,
लगाएं वृक्ष चहुं ओर।
धरा को हरियाली चूनर ओढ़ा कर
श्रृंगारित कर दें ऐसा
जैसे--छाई हों हरियाली तीजें
और हरियाली गणगौर।
वृक्ष--रहित न हो सड़क कोई भी?
छाई हो वृक्षों की कतार दोनों ओर।
जहां बैठ कर प्यारे पंछी
करें कलरव--मनभावन नाचें मोर!
चकित, श्रमित, श्रमिक बटोही पर
जिनकी छांव तले चले ना गर्मी का जोर
इनसे ही मिलते हमें हैं
फल--फूल, सब्जी और गोंद!
इन्हीं से मिलती है ऑक्सीजन भरपूर।

--गुड़गांव (हरियाणा)

रुंख

प्रहलाद पारीक

रूंखड़ों है जिंदगानी रूखं है धरम ध्यान
रूखं आज मिनखा री आन--बान--शान है।
रूखं वे तो लागे देखो धरती घणी रूपाली
बना रूखं लागे देखो जाणे जीवतो मसाण है।
म्हारो अरज है रूखं रोपो हर एक
सबकी भलाई इण में ही छिपो जाण है।
रूखं नी रहया तो त्रास भुगतेला मानव भी
रूखं में ही बसे पशु--पखियां रा प्राण है।

भीलवाड़ा (राज.)

बुढ़ापा

जीवन का,
ऐसा मोड।
अनुभव का,
पूर्ण निचोड़।

डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा,
ग्वालियर

कविताएं

महानगर जल रहा है

–रविंद्र जैन

चहुं दिशि उड़ता गर्द और गुबार
जैसे
मद्दिम–मद्दिम जलता हो शहर
आठों पहर
इस आग से दग्ध होकर
भाग रहा है
जीवन का हर सोपान
एक चौराहे से दूसरे चौराहे तक,
हर चौराहे पर ठिठक कर
सुनता है क्षण भर
अपनी नियति की पदचाप
और बढ़ जाता है आगे
सुनी अनसुनी करके,
पर कभी यूं भागने से नियति टली है?
जलना पड़ेगा इसे
किए हैं पाप
प्रकृति से छेड़छाड़ के
शहरों मे भीड़भाड़ के
और किए जा रहा है
पाप दर पाप
इसलिए
नजदीक आती जा रही है
नियति की पदचाप।

भीलवाड़ा (राज.)

अमृतम् जलम्

संतोष जोशी

जल अमृत है, जीवन है।
इसके लिए पहले होते थे यज्ञ, हवन, ताकि वायु शुद्ध हो।
हर एक गृहस्थ भी करता था हवन ताकि परजन्य से बने
शुद्ध मेघ से, पानी बरसे।
एक–एक काम होता था, विचारपूर्ण वैज्ञानिक।
प्रकृति से उतना ही लेते थे, जितना आवश्यक हो।
आज हवन की जगह, जहरीली गैस छोड़ रहें हैं वायु में,
और केमिकल जमीन में।
हम काट रहे हैं, जंगलों को, निजी स्वार्थ वस।
और खड़ा कर रहें हैं, कंकरीट का जंगल।
फिर कैसे पसीजेंगे बादल?
कैसे बरसेगा अमृतम जलम्?
हमें वापिस लौटना होगा, प्रकृति की तरफ
सीखे अपने अतीत से, परवरिश करें पेड़ों की
वनस्पतियों की जीवों की।
तभी पसीजेंगे बादल, और गरजेंगे, फिर बरसेंगे जरूर।
इस बार हम जानें न देंगे मेहमान की तरह
रोक कर रखेंगे– कुंड, कुंए और बावड़ियों में।
जो हमने साफ करके रखी है, उसके लिए,
जल है, तो जीवन है, जीवन है, तो कल है,
ये सुंदर धरती है, हम है, आप है, और
ये बिल्कुल साफ है– जल है तो हम है।

भीलवाड़ा (राज.)
मो.नं.9414144026

सुमन के प्रति

कपूरचंद लुहाड़िया

सुरभित सुंदर सुखद सुमन, तू उपवन में इठलाता है।
मधुर मनोहर ओस बिंदु से सुंदर तर बन जाता है।।
न ही जानत है तू रोना, हंसता और हंसाता है।
केंद्र स्निग्धता शुचिता का तू देवों के मन भाता हैं।।
प्रखर सूर्य की किरणों से तू, हो उदास मुरझाता हैं।
तिरस्कार कोई करता है, उसे भी गले लगाता है।।

जयपुर (राज.)

पलाश-एक आशा

–सुधा तिवाड़ी 'सखी'

"केटीली झाड़ियों के बीच मुस्कुराता है पलाश"
उम्मीद की आग बन दहकता है पलाश
उम्र कम ही सही, ऊर्जा मन में भरता है पलाश
बिखरना उसकी किस्मत मगर हाथों में
रंग छोड़ जाता है पलाश।
पाई नहीं सुंगध तो क्या अपने रंग–रूप से
रेगिस्तान को सजाता है पलाश।

भीलवाड़ा (राज.)

कविताएं

हरी–भरी धरती

डॉ. अलका गोयल

गर, छायादार वृक्षों से 'धरा' भरी होती
न धूप से कोई तपता
न पसीने से कोई तर होता।
काश, फलदार वृक्षों से 'पृथ्वी' भरी होती
न भूख से कोई मरता
न फल से कोई वंचित होता।
गर, फूलों के पौधों से 'वसुधा' भरी होती
न सुगंधि के लिए कोई तरसता
खुशबू से चमन महक रहा होता।
काश, हरे–भरे बगीचों से 'भूमि' भरी होती
न बीमारियों से कोई तडफता
शुद्ध वायु का सेवन कर रहा होता।

वृक्षारोपण

भारत की बंजर धरती को
आओ सब हरा–भरा बनाएं
बच्चे–बड़े सब आकर अपने हाथों से
एक पौधा अवश्य लगाएं।
प्यार से मिलजुल कर सींचें
इन नन्ही क्यारियों को
वन–उपवनों की महत्ता को समझें
इनको उजडने से बचाएं।

दिल्ली–110092
मो.98995 76336

डॉ. ए.बी. सिंह के दोहे

समुद्री तूफान

जल ही जीवन मानना, इससे बचते जीव।
जल को ऐसा समझना, सभी जीव को नींव।।

पानी पर उस चांद का, रहता सदा प्रभाव।
लहरे उठती समुद्र में, फंसे ज्वार में नाव।।

सागर का पानी तपे, बन जाता है भाप।
जाकर कर के मैदान में, बरसे अपने आप।।

सागर तट पर देखिये, सभी तरफ उल्लास।
आगे बढ़ने का सभी, करते रहते प्रयास।।

सागर तट पर घूमना, सुबह–शाम दे काम।
तब शरीर अच्छा रहे, काम किये परिणाम।।

ए–1–2, शांतिनिकेतन, मधुवन,
चित्तौड़गढ़ (राज.)

मुक्तक

–वंशीलाल पारस,

मैं पीड़ा के पायदान पर, अभाव करे मेरी अगवानी।
जीवन रही मेरी–पाप–पुण्य की खेंचातानी।।
राई जितना सच बोला तो, पर्वत जितनी हुए पिटाई।
मेरी राम कहानी तो बस–रमता जोगी बहता पानी।।

भीलवाड़ा(राज.)

कविताएं

आओ हम सब पेड़ लगाये

—विमला जोशी

आओ हम सब मिल—जुलकर
घर आंगन में पेड़ लगायें,
आयेगी खुशहाली जग में
पर्यावरण को शुद्ध बनायें।
मिले औषधि जड़ी—बूटियाँ
तन—मन अपना स्वस्थ बनायें,
शुद्ध मिले ऑक्सीजन हमकों
आओ हम सब पेड़ लगायें।
पेड़ों से होती हरियाली
पेड़ ही पर्यावरण बचायें,
प्रदूषण ना रहे यहां पर
आओ हम सब पेड़ लगायें।
पेड़ों से हम भोजन पायें
पेड़ ही जीवन का आधार,
पानी के लिए पेड़ लगायें
बिन पानी सब है बेकार।
सोये हैं हम अब तो जागें
नयी चेतना मन में लायें,
पर्यावरण बचाना है तो
आओ हम सब पेड़ लगायें।

—हलद्वानी (नैनीताल)

परोपकारी पेड़

डॉ. राकेश चक्र

ये कितने उपकारी हैं।
इन्हें कुछ पता ही नहीं।।
हैं ये प्रकृति के पुत्र सलौने सीधे कितने।
खड़े रहते हैं सदा, आज्ञा के पालक बने।
हैं दया के सागर, तरूणाई में बने ठने।
मौनी रक्षक हैं ये बने, इन्हें कुछ पता ही नहीं।।
है विव्हल विहंग भार करती विहार डार।
कितने सुआ ने फाड़ दिये किसलय के द्वार।
बैठि—बैठि क्षण—क्षण में गाने लगें नव राग।
है नियति इन पर बलिहार, इन्हें कुछ पता ही नहीं।।

—90 बी, शिवपुरी, मुरादाबाद—244001

स्वच्छ व स्वस्थ भारत

एस.के. लोहानी 'खालिस'

आओ आओ अलख, जगाओ अलख जगाओ,
अपने भारत को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाओ।
शुभारंभ अभियान का अपने घर से कराओ,
कोने—कोने चप्पे—चप्पे से सब गुबार हटाओ।
छोटे—बड़े स्त्री—पुरूष को प्रेम गुहार लगाओ,
हर घर—आंगन—गलियारे में यूं बुहार लगाओ।
फिर घर बाहर गली—गली झटकार लगाओ,
धीरे—धीरे संपूर्ण देश स्वच्छता से महकाओ।
ऐसे स्वच्छ बनाकर सब मच्छर व रोग भगाओ,
निरोगी बना देश में दवाओं का बजट बचाओ।
शुद्ध वातावरण में हर भारतवासी का विकास कराओ,
विदेशी मुद्रा बचाकर भारत को फिर सिरमौर बनाओ।
इक दिन बन जाए स्वच्छ—स्वस्थ भारत हमारा,
फिर बन जाए सैलानियों की आंख का तारा।

भीलवाड़ा (राज.)

'पर्यावरण'

मीना शर्मा

वसुंधरा के आचल में प्रकृति का रूप समाया है,
प्रकृति ने अपने स्वरूप से, ये पर्यावरण बनाया है।
पर्वत, झरने, बहती नदियां, वन, उपवन उपजाया है,
वृक्षों, बेलों, फूलों से ये संसार सजाया है।
पर्यावरण से हर प्राणी को, प्राण—वायु भी मिलती है,
जीव, जन्तु, खग,मृग, मानव की, श्वसन क्रिया भी चलती है।
गंध,सुगंध, महक फूलों की, वृक्षों, पौधों से मिलती है,
चंदन, लकड़ी, मधु, औषधियां, संजीवनी बूटी मिलती है।
पर्यावरण से ही जीवन है, हर पशु, पक्षी, मानव का,
स्वस्थ रहेगा पर्यावरण तो, स्वस्थ है जीवन मानव का।
हम सब मिलकर वृक्ष लगायें, है कर्तव्य हर मानव का।
हराभरा पर्यावरण बनायें, हो उद्देश्य हर मानव का।
है संदेश यही इस युग का, वृक्ष लगायें पर्यावरण बचायें,
वृक्षों से ही वर्षा होती है, वर्षा से ही फ़सलें लहरायें।
बाग, बगीचे, वन और उपवन, वृक्षों से धरती को सजायें,
आम, नीम और महुआ महके, चंदन महक सा युग महकायें।

हाइकू

पर्यावरण पर हाइकू

गुलाबचंद मीरचंदानी

1.पर्यावरण
हम करें वरण
प्रत्येक क्षण।
2.पर्यावरण
धरती का श्रृंगार
समझो यार।
3. संचय करें
हम वर्षा का जल
सुखद कल।
4. बड़ा है ज्ञानी
जो बचाता है पानी
छोड़े नादानी।
5. गूंज रही है
रहिमन की बानी
पानी है दानी।
6. पेड़ देवता
हमेशा छाया देता
धूप सहता।
7. स्वर्ग बनाये
हम सब मिलके
पेड़ लगाये।

–मो.94142 87251

बरगद



डॉ. मधुकांत,

जमाने में सिरफिरे कुछ लोग होते है
जो रक्त से दीपक को जला देते हैं।
जमाने में कुछ सिर फिरे शहीद होते हैं
जो देश के लिए जान गंवा देते हैं।
वे सिरफिरे ही बरगद का पेड़ हैं
जिनकी छांव के हम सिर छिपा लेते हैं।

–रोहतक (हरियाणा)

हाइकू

–सूर्यनारायण गुप्त 'सूर्य'

1. वृद्धा–आश्रम
मां–बाप खाते जहां
बेटे का गम।
2. कर वरण
स्वर्ग से सुंदर है
मां का चरण।
3. मां का ही दूध
बड़ा होकर भूला
उसका पूत।
4. मां का आंचल
इतना निर्मल ज्यूं
गंगा का जल।
5. बापू सो गये
काले राजनीतिज्ञ
गोरे हो गये।

–मो.094502 34855

प्रयास

देवेंद्र कुमार मिश्रा

दलदल में फंसा
कब बचा
लेकिन जोर लगा–लगा कर
उछल–उछलकर
दलदल का कीचड़
बाहर उछलने लगा
और आधा हो गया दल दल।
अब दलदल मात्र कमर तक
कीचड़ रहा
जिसे थोड़े प्रयास से
पार करके बाहर आ गया आदमी।

–छिंदवाड़ा (म.प्र.) मो.9425405022

दोहा

कविताओं में ही मिले, शीतल सुखद समीर।
वायु–प्रदूषण से हुई, स्थिति अति गम्भीर।।

–कैलाश त्रिपाठी 'भावुक'

कविताएं

पेड़ धरती रा श्रृंगार हैं...

—भंवर लाल शर्मा

मिलकर पेड़ लगाओं मित्रों, धरती रा श्रृंगार हैं।
जंगल, झरने, पर्वत, नदियां धरती के उपहार हैं।
गरीबी का रोग मिटाते ईश्वर के अवतार हैं।
मिलकर पेड़ लगाओं मित्रों धरती रा श्रृंगार है।
खेतों में हरियाली करते, नैया पार लगाते।
तितली—भंवरें गुंजन करते, कांटों संग मुस्काते।
रिमझिम वर्षा, खिलते उपवन, बासंती बयार हैं।
मिलकर पेड़ लगाओं मित्रों, धरती रा श्रृंगार हैं।
यातायात, उद्योग—खजाने, अर्थ—जगत आधार हैं।
अन्न, वस्त्र, ईधन और औषध—वायु रा भंडार हैं।
देते शीतल छाया, निर्धन—पंछियां रा घरबार हैं।
मिलकर पेड़ लगाओं मित्रों, धरती का श्रृंगार हैं।
पेड़ कटे, जल—वायु दुषित, बाढ़—अकाल छायेंगे।
पेड़ लगाने को अब, हम मिलकर आगे आयेंगे।
जल, वायु, प्राणी—जगत के सजग पहरेदार हैं।
मिलकर पेड़ लगाओं मित्रों, धरती रा श्रृंगार हैं।
नीम,आम, अर्जुन, शीशम, आंवला—गिलोय उगाना।
ग्वारपाठा, तुलसी, घिया से सारे रोग मिटाना।
अनाथों के नाथ—मित्र, और ममता रा व्यवहार हैं।
मिलकर पेड़ लगाओं मित्रों, धरती रा श्रृंगार हैं।

—डी—80 आजाद नगर, भीलवाड़ा—311001

गजल

डॉ. श्रीमती तारा सिंह

मेरी तरह उसकी भी नींद उड़ जाती तो अच्छा
पाँव साये से दो कदम आगे रहता तो अच्छा
गम से मरता हूं, मगर इतना भी नहीं
कि दुनिया वाले कहे, मर जाता तो अच्छा
कल आये, आज कहते हमें जाना है
इससे तो तेरा न आना होता अच्छा
बुरा क्या मानना जो कहे कोई बुरा, दुनिया में
है कोई ऐसा जिसे हर कोई कहे अच्छा
दिल लगाकर हमसे वे भी रहने लगे तन्हा
इससे तो दिल न लगाना, होता अच्छा

—नवी मुम्बई

नीले नभ के पीले तारे

जगदीश सिंह राव 'विश्वासलोक'

नीले नभ के पीले तारे
आसमान में लगते प्यारे
सारे जग को करते रोशन
टिम—टिमाते प्यारे—प्यारे
हमसे बाते करते तारे
नीले नभ के पीले तारे।
अपना उजाला हमको देते
बदले में नहीं कुछ लेते
मिलकर बनते नभ की फैशन
झिलमिलाते रात में खिलते
सूरज निकलते झट छुप जाते
कहां से आते, कहां चले जाते?
नीले नभ के पीले तारे!

—फतहनगर, (उदयपुर)

जिंदगी बोझ हो गई

—राधेश्याम सरावगी 'मसूदिया'

जिंदगी बोझ हो गई,
खर्चे की तरह,
गरीब—बे—बस—ओ—लाचार
कर्जे की तरह।
नेता दल बदल करते
दलदल में,
जनता से रूबरू होते
गुर्गे की तरह।
ढेर सारे चुनावी वादे,
भुलाने के लिये,
बेचारगी पर थूकते
जर्दे की तरह।
रोटी, कपड़ा, मकान की
होती जद्दोजहद,
स्वार्थ की होती जंग
मुर्गे की तरह।
तजुर्बेकारों की
कद्र नहीं होती,
अस्तित्व हवा हो जाते
चर्चे की तरह।

—कांकरोली, राजसमंद

गजल

—श्याम सखा 'श्याम'

चले ख्यालों के जब लश्कर
हुये बेहाल हम अक्सर
गया था टूट दिल अपना
तेरे सपनों में यूं आकर
रहा बस में न दिल अपने
तुझे यूं सामने पाकर
कहां मिलते हमें गुन्चे
लिखे किस्मत में पत्थर
बहुत पछताए थे वो ऐ 'श्याम'
हमे वो अपने घर लाकर

कविता

किश्तों पे घर

—प्रवीण प्रणव

चाँद ने भी लगता है कोई घर खरीदा था
किश्तों पे, पूरनमासी के दिन
अपनी उम्र का एक हिस्सा
चुका रहा है वो हर दिन ब्याज में
वजूद मिट जाता है उसका अमावस्या आते जाते
पर किश्तें नहीं मिटतीं
साहूकार बड़े शातिर होते हैं
इंतजार करते हैं कि तिनका—तिनका जोड़ कर
चांद अपना वजूद फिर खड़ा करे अगली पूरनमासी तक
और सिलसिला शुरू हो जाता है फिर किश्तें चुकाने का
चाँद क्यूं न तुमने इंसानों की हालात से कुछ सीखा
चाँद तू भी क्यूँ इंसान हो गया।

—हैदराबाद, (तेलंगाना)

गजल

बीज कर्म के बोएं हम।
नहीं भाग्य पर रोएं हम।।
मूल्य समय का कितना है,
सोचें, व्यर्थ न खोएं हम।
जो बीता सो बीत गया,
बीते को क्यों ढोएं हम।
अगर चाहते पाना कुछ,
चादर तान न सोएं हम।
अमन चैन के बिरवों को,
पानी सींच, भिगोएं हम।

अश्वनी कुमार पाठक

कविता

पन्ना धाय

—पवन पहाड़िया

राजस्थानी धरती पर कई
बढ़चढ़ कर बलिदान हुए है ।
एक से बढ़कर एक यहां पर
मातृभूमि की शान हुए है
जो न जानती बलिदानी पर
समय पड़े हूंकार पड़ी यहां,
परदे में रहते भी मानो
सीख समझ कर बड़ी हुई यहां
बड़े राज्य की बड़ी रानियों
कीं बातें बस छोड़ दीजिए
साधारण सी महिलां की ये
बलिदानी तो जान लीजिए,
रानी पद्मिनी शील व्रत के
खातिर जौहर रचाया था।
हाड़ी ने मोह देख पति का
शीश काट भिजवाया था।
इन सब से भी बढ़ चढ़कर
निकली पन्नाधाय यहां
स्वामी की रक्षा के खातिर
अपने सुत की बलि जहां
कैसे छाती मान गई थी।
मां की इस बलिदानी पर
धन्य धन्य है पन्ना माई
रहे युगों तक अजर अमर।

पो—डेह, जिला—नागौर

पांच शब्दीय मिनी—गजल

मीठे बोल,
खिले ज्यूं फूल।
कड़वे बोल,
चुभे ज्यूं शूल।
कलह—क्लेश,
उड़े ज्यूं धूल।
पीछा करती,
करे ज्यूं भूल।
सार्थक सोच बने,
जीवन अनुकूल।

—प्रकाश शर्मा 'बाबूजी'
चारभुजा—313333 (राजसमंद)

कविताएं

बेचारा बागवान

पुनीता भारद्वाज

एक माली ने घर आंगन में
पौधे तीन लगाये
धीरे–धीरे–बड़े वो तीनों
मन ही मन हर्षाये।
कभी खाद की
कमी रही तो
कभी न पानी पाये।
माली ने फिर सींच प्रेम से
पौधों को दिया बड़ाये।
देख–देख खुश होता माली
कल मीठे फल खायेंगे।
किंतु पता नहीं था ये क्या
आंधी को सह पायें।
चली जोर की आंधी इक दिन
एक पेड़ गिरा धरती पर
कभी नहीं फिर उठा वह
किए सभी ने लाख जतन
सो गया वह चिर निद्रा में
माली था फिर बहुत उदास।
देख माली को उदास
टूटी बाकी सबकी आस।
दोनों पेड़ भी कुम्हलाकर
कुछ सिमटकर यूं खड़े रहे
सोच रहे थे वक्त की आंधी
हम सब क्यों सह गये
गिर जाते सब साथ तो
न होना पड़ता हमें निराश।

–भीलवाड़ा (राज.)
मो.9694914860

दोहे

वृक्ष लगाना पुण्य है, देते जीवन दान।
प्राणों का पोषण करें, हैं उपकार महान।।
वृक्षों को काटो नहीं, है अगणित उपकार।
पूर्ण करें धन धान्य से, मानव का भण्डार।।

–कैलाश त्रिपाठी 'भावुक'

पानी

अरविंद कुमार

बादल है
आँचल है।
हलचल–ही–हलचल है।
प्यास खड़ी ताक रही
बूंद–बूँद
मौसम की देखो मनमानी!
होंठ अभी सूखे हैं।
सूखी हैं आंखें
टूट रहीं सांसें
जीवन है।
नइया है।
नाव का खेवइया है।
देता आकाश नहीं
बूंद–बूंद पानी–
नदिया से करता बेमानी!
सुलग रही धरती से
उठ रहा धुआं
मन मारे बैठा है।
गांव का कुआँ
टूटन है।
विघटन है।
अनमन–ही–अनमन है।
मिला नहीं अधरों को
बूंद–बूंद पानी।

दोहे

जल ठहरे तो विष बने, बहे अमृत बन जाए।
गति जीवन की श्वास है, अगति मरण कहलाए।।

गंगा में जब पड़े नेताओं के पाँव।
गंगा मैली हों गई, हुए विषैले गांव।।

आंखों का पानी मरा, हम सबका यूं आज।
सूख गये जल–स्त्रोत सब, इतनी आई लाज।।

–गोपालदास 'नीरज'

आलेख

पृथ्वी पर शिव के प्रतिनिधि हैं पेड़–पौधे

–अरूण कुमार पाण्डेय

वनस्पति उपासना यानि पेड़–पौधों की पूजा हमारी संस्कृति का मुख्य अंग है। यह पद्धति अकारण नहीं शुरू है। पेड़ों से हमें आक्सीजन, भोजन और जल तीनों मिलता है और इन्हीं से हमारा जीवन चलता है। ऐतरेय और कौषिताकि ब्राह्मण ग्रंथ में 'प्राणौ वै वनस्पति' (ऐतरेय 2.4, कौषितकि 12.7) कहा गया है। जहां वनस्पतियों से हमारे जीवन को संचालित करने वाले तत्व मिलते हैं, वहीं वनस्पतियां ऐसे तत्वों को भी समाप्त करती हैं, जो हमारे जीवन को नुकसान पहुंचाते है। इसीलिये वनस्पतियों को पृथ्वी पर शिव की प्रतिनिधि‍ा माना जाता हैं, जोकि कार्बनडाइआक्साइड का हलाहल पीकर हमें जीवन अमृत आक्सीजन देती हैं। शुक्लजयुर्वेद का एक उदाहरण–

नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः। क्षेत्राणां पतये नमः।
वनानां पतये नमः। वृक्षाणां पतये नमः।
ओषधिनां पतये नमः। कक्षाणां पतये नमः।

(यजुर्वेद 16.17.18)। इसमें शिव को वृक्ष, वन, ओषधियों इत्यादि का स्वामी का कहा गया है। देवताओं को उनके गुणानुरूप जीवों और पदार्थों का स्वामी नियुक्त किया गया है। यदि शिव वनस्पतियों के स्वामी कहे गये हैं तो इसका मतलब यह हुआ कि वनस्पतियों का गुण भी शिव जैसा होना चाहिये। शिव का शिवत्व बहुत व्यापक है। शिव का मतलब होता है सुंदर और वनस्पतियां भी पृथ्वी का श्रृंगार करती है। सुंदरता बढ़ाती हैं। इस तरह से वनस्पतियों का व्यवहार उनको शिव का प्रतिनिधि साबित कर देता है। वहीं दूसरी ओर शिव विश्वपूज्य व सर्वपूज्य इसलिये हुये क्योंकि उन्होंने विष पीकर संसार की रक्षा की और अमृत अन्य के लिये छोड़ दिया। विष पीकर अमृत छोड़ देना भी शिवत्व है। हमारे पर्यावरण में वनस्पतियां भी कार्बन डाइआक्साइड जैसे विष को ग्रहण कर हमारे लिये आक्सीजन जैसा अमृत छोड़ देती हैं। यह बताने की आवश्कता नहीं की जा सकती। एक बात और समझने की है, ओषधियां भी पेड़–पौधों से ही मिलती है।

लघुकथा

भद्दा मजाक

–श्यामलाल कौशल

बात उस समय की है जबकि मैं लगभग से पांच साल का था। मैंने कोई शरारत की और सजा के तौर पर मेरे माता जी ने यह कहकर मेरे साथ बोलना बंद की दियां, "तूँ तो हमारा है ही नहीं। जब तूं छोटा था कोई तुझे हमारे दरवाजे के आगे फेंक गया था। हम तो तरस करके तुझे पाल–पोस रहे हैं। तुमने देखा नहीं, कि हम सब गोरे हैं और तुम्हारा रंग काला है। तुम्हारा तो हमारे साथ कुछ मिलता ही नहीं, तभी तो तूं हमारा कहना नहीं मानता।" यह सुनकर मैं फूट–फूट कर रोने लगा। कुछ समय के बाद मेरी माता जी को मेरे पे तरस आ गया और वह हंसकर मुझे अपनी गोदी में बिठाते हुए कहने लगी, "मैंने तो झूठ–मूठ में यूं ही मजाक किया था। तुम तो मेरे सबसे छोटे लेकिन सबसे प्यारे बेटे हो"। यह सब सुनकर मुझे कुछ तसल्ली हुई। बेशक यह सब मजाक था लेकिन मैं बहुत बार सोचा करता कि अगर यह सच होता तो? कहना ना होगा कि जब मेरे माता जी ने अंतिम सांस ली, मैं उनके पास नहीं था लेकिन हमारे परिवारजनों का कहना है कि अंतिम समय में भी वह मुझे सबसे ज्यादा याद करती रहीं।

–रोहतक (हरियाणा)

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है ये सूरत बदलनी चाहिए।
–दुष्यंत कुमार

जंगल में सांप, शहर में बसते हैं आदमी,
सांपों से बच के आये तो डसते हैं आदमी।
–फैज

लघुकथाएं

सच्ची हंसी

—डॉ. राकेश 'चक्र'

"आज कैसा पेपर हुआ शिल्पी?" शिल्पी के नाना ने मुस्कराते हुए पूछा।

"आज तो नानाजी बहुत अच्छा पेपर हुआ।" बी. एस.सी. प्रथम वर्ष की परीक्षा दे रही शिल्पी खिलखिलाते हुए बोली।

"शाबाश शिल्पी! बहुत खुशी हुई सुनकर। इसी तरह मेहनत से पेपर देती रहो।" नाना ने कहा।

"आज तो नानाजी चीटिंग करने वाले सभी बच्चे छतों को ताकते रहे थे.......कॉलेज में बहुत सख्ती थी.... .बाहर वालों का पूरी तरह आना–जाना बंद था......जीने के पास प्रोक्टर और कई टीचर बैठ गए थे। .....किसी को अंदर नहीं घुसने दिया गया.....नकल करने वालों की पर्चियां भी पहले ही निकलवा ली गईं थीं........।" आत्मविश्वास से लबरेज शिल्पी हंसते हुए बोली।

"जब तुम केमिस्ट्री का पेपर देकर आयीं थी, तो तुम उस दिन चीटिंग करने वालों से ईर्ष्या कर दुखी हो रही थीं कि उनके नंबर अच्छे आयेंगे...... कि आजकल अच्छे नंबरों का जमाना है.... उन्हीं को सरकार लेपटॉप बांटती है और आर्थिक सहायता करती है.......कि नानाजी आपकी जुगाड़ हो तो किसी टीचर से कह देना......लेकिन मैंने तुम्हें आश्वस्त किया था कि तुम अपनी मेहनत पर पूरी तरह विश्वास रखो.......मेहनत से पढ़ो........मेहनत का फल बहुत मीठा होता है......उन्हीं की जीत होती है ......आज तुम्हारी समझ में आ गया कि काठ की हाड़ी रोज–रोज नहीं चढ़ती है......यह सच्ची हंसी तो मेहनत से ही मिल सकती है.....शिल्पी।" शिल्पी के नाना विगत की बात का स्मरण दिलाते हुए मुस्कराकर बोले।

नाना और धेवती दोनों ही प्रसन्नचित थे। धेवती तो इसलिए कि उसके सब पेपर अच्छे हो रहे थे और नाना इसलिए कि उनकी बातों पर धेवती ने पूरी तरह अमल कर लिया था।

मुरादाबाद (उ.प्र.)

निरीक्षण

—डॉ.मधुकांत

निरीक्षक महोदय ने संकेत द्वारा खड़ा करके छात्र से पूछा, "विद्यालय की प्रयोगशाला में प्रयोग कराए जाते हैं?"

"जी नहीं, आधी छुट्टी में वहां चाय बनाई जाती है।"

"क्या आप पुस्तकालय में जाते हो?"

"जी नहीं–सारे बच्चे कहते हैं उसमें दीमक किताबें चाटती है।"

"क्या आपको खेल के मैदान में ले जाया जाता है?"

"जी नहीं! वहां सब लोग उपले बनाते हैं और बूंगा लगाते हैं।"

"कभी आप क्राफ्ट रूम में गए हो?"

"जी नहीं, उसको भैंस घर बना रखा है।" मुख्याध्यापक जी भी खिसकरकर चले गए।

"आज कुछ बच्चे कम आए हैं क्या?"

"जी कई तो मास्टर जी के खेत में गए हैं और आधे मास्टर जी के घर रात को ट्यूशन पढ़ने जाएंगे।" गुस्साया निरीक्षक वहां से निकलकर सीधा मुख्याध्यापक के कार्यालय में जा घुसा।

अगले दिन छात्रों को पता लगा कि उस दिन छुट्टी के बाद प्रयोगशाला से और भी तेज हँसने की आवाज आती रहीं।

—रोहतक (हरियाणा)

पेड़

एक वृक्ष सदा दस पुत्रों के समान होता रे।
जिसने कभी पेड़ नहीं लगाया वह सदा ही रोता रे।।
जीवन में जो साथी धरा पर पेड़ बोता रे।
उस पेड़ का लाभ उसकी कई पीढ़ियों को होता रे।।
पेड़ लगाकर अपने देश का गौरव बढ़ाओं रे।
पेड़ लगाओं रे साथियों पेड़ लगाओं रे।।

—रामप्रसाद भदादा, भीलवाड़ा(राज.)

लघुकथाएं

ऐसा कवि

आचार्य सूर्यप्रसाद शर्मा 'निशिहर'

टनकपुर के नीम पार्क में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन था। मंच पर गुवाहटी के सर्वश्री लतीफ लश्कर, शिलांग के चंचल चमक, जबलपुर के मुरली मृगांक, लुधियाना के राघवेंद्रसिंह, सूरत के जयंति भाई, खगड़िया के बुद्धिनाथ बुद्ध, उज्जैन के मोहनमाधव, रायबरेली के शम्भू प्रसाद, भुवनेश्वर के मृत्युंजय विहग, छपरा के सीता रमन, गुड़गांव के रवींद्र चौहान, दिल्ली की गिरिजा गुंजन एवं अल्मोड़ा के विनोद रावत के अतिरिक्त पांच जनवदीय कवि मंच पर आसन ग्रहण कर चुके थे। अध्यक्ष का पद भार मुरली मृगांक एवं मुख्य अतिथि का पद्भार श्री शम्भू प्रसाद जी स्वीकार चुके थे। अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर पुष्पार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। इसके बाद, दिल्ली से पधारी गिरिजा गुंजन ने मां वाणी का स्तवन शब्द–सुमनों से किया।

अगले क्रम में सीता रमन ने माइक के सामने आकर अपनी रचना सुनायी, "चांदनी रात में मुस्कराया करो। बन चकोरी मधुर गीत गया करो।" इसे सुनकर श्रोताओं ने खूब तालियां बजायीं।

इसके पश्चात संचालक रविंद्र चौहान ने जनयदीप कवि मदन सांवला को काव्य पाठ के लिए आहूत किया। इन कवि महोदय की खासियत यह थी कि वह दस पंद्रह वर्ष पुरानी पत्रिकाओं की अच्छी रचनाएं डायरी में लिख लेते थे, जो दूसरों की होती थीं तथा उन्हें अपनी बता कर मंचों से सुनाया करते थे। ऐसी प्रवृत्ति के माहिर कवि मदन सांवला ने माइक के सामने खड़े होकर सुमधुर स्वर में एक गीत सुनाया। श्रोतागण वाह वाह कह उठे। मदन सांवला अपनी वाहवाही से बहुत प्रसन्न हुए और अपनी जगह पर जाकर बैठ गए।

इसके बाद माइक के सामने आए जयंति भाई। वह कहने लगे, साथियों! जो गीत मदन सांवला ने सुनाया वह मेरा लिखा है। उन्होंने सुनाने में में चार पंक्तियां छोड़ दी हैं। मैं उन्हें सुनाए देता हूं। इतना सुनकर मदन सांवला को पैरों के नीचे जमीन खिसकती सी महसूस हुयी। वह पीछे तो बैठे ही थे, चुपके से उठकर बाहर आए और लोगों की दृष्टि से ओझल हो गये। मंच पर दो कवि फुसफुसाए "ऐसा कवि" था।

श्रोताओं में से एक व्यक्ति चिल्लाकर कहने लगा, "आपकी कविता–गीत सुनाने वाला नकली कवि है। मैं भलिभांति उसे जानता हूं। वह बहुत जुगाड़ी है। मुंह दिखाने लायक नहीं रहा तो चुपके से खिसक गया है।"

रायबरेली, मो. 094537 12120

कविता

हमसफर

–उमेश शर्मा

नहीं था दर्द का अहसास
जब तुम होती थी मेरे पास
जिम्मेदारियां तब भी थी
जिम्मेदारियां अब भी हैं
उम्र बढ़ जाने पर पुर्जा– पुर्जा दर्द करता
फर्ज पूरा न निभा पाने का गम भी सताता
एक सहारा मिला था, वो भी तोड़ गई
दो पल सुस्ताता, वो भी साथ छोड़ गई
गम तुम्हारे चले जाने का है
दुख अकेला रह जाने का है
कसमें खाई थी हमने साथ मरने–जीने की
वादों को भूला कर, तुमने तो रूसवाई की
दर्द हो चाहे जितना फिर भी मैं मुस्कुराता हूं
यादें तुम्हारी साथ लिए मैं तो जीए जाता हूं
साथ मैं जो करना था, वो अब अकेला ही निभाता हूं
धीमी चाल जिंदगी की, हर पल का सामना किए जाता हूं।

हरिद्वार (उत्तराखंड)

वाणी ऐसी बोलिए, प्रजा धोखा खाय।
नेता जी का साथ ले, अपने को लुटवाय।।

–देवीलाल दुलारा

लघुकथाएं

बदले तेवर....

—डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव

राजस्थान से महाराष्ट्र तक की यात्रा कर के मैं अपनी ननद के यहां पहुंची हूं। पिछले कई वर्षों से ननद रानी का आग्रह था—भइया—भाभी आप लोग इधर आयें घूम कर जायें, आपको अच्छा लगेगा। अब की रक्षा—बंधन के पर्व पर पहुंच कर मैंने और उसके भइया ने उसकी सारी शिकायतें दूर कर दीं।

कल का पूरा दिन रक्षा बंधन का पर्व मनाने में हंसी—खुशी बीत गया। दरअसल मेरी ननद इनसे काफी छोटी हैं तो मुझे मानती भी काफी हैं और जब से सासू माँ गूजरी है तब से तो पुनीता रानी (ननद) का लाड़ मेरी और कुछ अधिक ही हो गया है। मैं भी इसे अपनी बेटी जैसा जी मानती हूं। फिर मैंने अपने भाई—भाभी से भी फोन पर बात कर ली और बताया कि मैं पूना पुनीता के पास आई हुई हूं, वे लोग भी प्रसन्न हुये।

शाम को हम लोग शहर घूमने निकले—बहुत ही बढ़िया भव्य ऐतिहासिक शहर है यह। फिर शर्पिंग का सिलसिला शुरू हुआ। मॉल में अचानक एक प्रौढ़ सी युवती को देखकर मैं ठिठक गयी.... बड़ा देखा जाना—पहचाना चेहरा लगा, पर बहुत ध्यान करने पर भी मैं उस औरत से कोई पहचान न निकाल सकी। मैं आगे बढ़ गयी, थोड़ी देर बाद देखती क्या हूं— मेरे नंदोई उस औरत और उसके पति से बातें कर रहे हैं खैर खा पीकर, सैर—सपाटा कर के हम लौट चले घर। तीसरे दिन हमें वापस जोधपुर लौटना था। हमारी तैयारी हो चुकी थी। तभी डोर बेल बजी आगुंतक वही मॉल वाले दम्पति थे। तभी दम्पति में श्रीमान महोदय बोले—"जब से मेरी मैडम ने सुना है कि आपकी भाभी जोधपुर से आई हैं, मिलने की रट लगायें बैठी हैं— सो मैं ले आया, लो भाई मिलो"। बाद में धीरे—धीरे बात करते—करते पता चला वह मेरी कालेज की सहेली अवंतिका है— फिर तो हम दोनों में बरसों पुरानी ढेरों बातें हुई। फिर वह एकाएक उठ खड़ी हुई बोली— "चलो जी मां जी के इन्जेक्शन, खाना और दवाई का समय हो गया है। मैने धीरे से चिकोटी काटी—"ये कैसा परिवर्तन है। तू ही तो कहती थी सास की सेवा करेगी मेरी जूती"। "अरे छोड़ भी वह नादानी की बातें दस वर्ष पूर्व मेरी बच्चेदानी ऑपरेशन द्वारा निकालनी पड़ी थी, तब मां जी ने जो सेवा की वह तो कोई सगी माँ भी नहीं कर सकती। वह मेरी सास नहीं माँ है। मैं चाहती हूँ हर जन्म में ये ही सासू माँ के रूप में मिले...."।

—जी—22, भारी पानी कॉलोनी, रावतभाटा
वाया कोटा (राज.)
मो.94137 31811

दामाद

शारदा गुप्ता

"अरे अरे भैय्या का करत हो" कहते हुए सायकल रिक्षा वाला रामदीप लड़खड़ाता हुआ नीचे गिर पड़ा।

भीड भरी सड़क पर लोगों को एक दूसरे की तरफ देखने का समय नहीं होता। ऐसे में कुछ लड़कों ने आगे बढ़कर लम्बी—चौड़ी चमकती कार को रोक लिया।

सूट—बूट पहना रमेश बड़ी स्टाइल के साथ बाहर निकला— "अभी सालों को मजा चखाता हूं। जानते नहीं मैं कौन हूं।

अभी एक फोन करूगाँ तो सबकी सिट्टी—पट्टी गुम हो जायेगी, सिगरेट के धुआं का छल्ला बनाते हुए कमर पर हाथ रखकर बडे रौब के साथ उसने सवाल उछाला "पता है मैं कौन हूँ" पुलिस कमिश्नर साहब का दामाद हूं। स्वयंम् कमिश्नर साहब भी बात नहीं टालते हैं। मेरी जी हुजुरी में लगे रहते हैं। तुम लोगों ने मेरी गाड़ी रोककर अच्छा नहीं किया। इस बुढ़े से रिक्षा नहीं चलती तो घर बैठे, सारे ट्रफिक का सत्यानाश कर देते है ये लोग।

तु ही इस बुढ़े की दो जून रोटी का इंतेजाम करवा देना। बड़ा दामाद बना फिरता है कमिश्नर साहब का। भीड़ में आई किसी रोषभरी आवाज सुनकर अपना रास्ता नापने के सिवा रमेश के पास कोई और विकल्प नहीं था।

इंदौर(म.प्र.) **452108**

लघुकथाएं

गॉड फादर

–अंशुमान खरे

एक खबर चर्चा में थी कि पुलिस के एक आला ऑफिसर ने एक नेता के चरण छुए। क्या गलत किया? पिता का आदर करना और चरण स्पर्श करना तो भारत की सभ्यता–संस्कृति का अंग है। कभी नेता पैर पड़ता है तो कभी आला ऑफिसर, ये एक–दूसरे के पूरक हैं। सत्ताधारी के पैरों में बैठना चाटुकारिता नहीं सभ्यता है। यही नेता सत्ताच्युत होने पर पुलिस के आला अधिकारियों की पूजा–अर्चना करते हैं। सब समय–समय की बात है।

यह हमारे देश में अनादि काल से चला आ रहा है। उगते सूरज को सभी प्रणाम करते है। आला अधिकारी ने चरण वंदना करके कोई पाप नहीं किया है। यही पुलिस अधिकारी नेताओं को मौके–बेमौकें ठोंकते–बजाते रहते हैं। मौके–बेमौके गरीब जनता पर रूआब दिखाने से नहीं चूकते हैं। गुण्डे–बदमाशों पर सभी राजनेताओं की कृपा दृष्टि रहती है। इसलिए पुलिस अधिकारी उनकी वंदना में लगे रहते हैं। कानून व्यवस्था पर उंगली नेताजी उठाते हैं, उनसे पंगा लेना पुलिस को भारी पड़ सकता है। सच भी है, कहते हैं 'काह न नेता करि सकैं' यानी नेता इस कलयुग में भगवान का अवतार हैं, इनकी पूजा–अर्चना करना सभी का धर्म है। वर्दी का सारा रूआब अनपढ़, पर गढ़े हुए नेताजी के सामने धरा कर धरा रह जाता है। यही नेता बताते हैं कि आदमी हिंदू है, मुसलमान है, सिख है, इसाई है। भाईचारे पर बार–बार प्रहार करते हैं और याद दिलाते हैं कि तुम भाईचारे को भूल जाओ....अपने को पहचानो। तुम हिंदू हो, मुस्लिम हो, सिख हो या ईसाई हो। और इस तरह तुम मात्र एक मतदाता हो, जिसकी पूजा बस एक बार चुनाव के वक्त होती है।

अपने देश की पुलिस की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। यह बहादुर कौम है, आदमी से सब कुछ कबुलवा लेती है, चाहे उसने किया हो या नहीं। चोर को शाह को चोर साबित करने में इनका कोई सानी नहीं। नेता जी और गुण्डे–बदमाशों से पुलिस का चोली–दामन का साथ है। पुलिस का पता नहीं कब कौन–सा सड़क छाप नेता लालबत्ती गाड़ी पर बैठकर उनके विभाग का मंत्री बन जाए। इस डर से वह सभी नेताओं की वंदना करते रहते हैं, न जाने किस रूप में मिल जाएं भगवान! पिता (गॉड फादर) का आदर करना पुलिस खूब जानती है।

अतः हे मानव। आला पुलिस अधिकारी का नेता जी के पैर छूना, चरणों में बैठना निंदनीय नहीं है। भगवान करे देश के सारे लोग एक–दूसरे की चरण वंदना करें.. .. गॉड फादर को शत– शत प्रमाण करें..... शर्म बिल्कुल न करें। आलोचना करने वालों को आलोचना करने दें... .. क्या उखाड़ लेंगे? ऐसे आला पुलिस अधिकारी को शासन की और से सम्मानित किया जाना चाहिए.... आमीन!

–लखनऊ (उ.प्र.)

पाप व पुण्य

–श्रीमती शकुंतला अग्रवाल 'शकुन'

पूजा भाभी के दो बेटियां हैं पर उनको एक बेटे की चाह है। वह नहीं चाहती कि उनके फिर बेटी हो इसलिए जब भी वह गर्भवती होती तो जांच करवाती।

उनको जब पता लगता कि उनकी कोख में बेटी है तो वह गर्भपात करवा देती। इस तरह पूजा भाभी ने दो बार गर्भपात करवाया। उसके बाद उनके लड़का हुआ। वह अब पांच वर्ष का हो गया है।

कुछ दिनों पहले अचानक भाभी की जोर–जोर से चिल्लाने की आवाजे आयीं, तो मैं उनके घर गयी और बोली–'भाभी क्या हुआ? चिल्ला क्यों रही हो?'

भाभी बोली "देखों ना ममता घर में सांप घुस आया है निकल हीं नहीं रहा।" "लकड़ी लाओ, मार दो" मैं बोली।

"ना बाबा ना मैं हत्या जैसा पाप नहीं करूगीं–भाभी बोली।" भाभी की बात सुनकर मैंने कहा 'भाभी आपने दो–दो बेटियों की हत्या की थी, तब आपको पाप नहीं लगा।"

–भीलवाड़ा (राज.) मो. 94626 54500

लघुकथाएं

पुस्तकों का महत्व

मनीष नंदवाना 'चित्रकार'

नरेंद्र व नयन दो भाई थे। नरेंद्र की पढ़ने में रूचि थी। उसके हाथों में हमेशा पुस्तक नजर आती थी। कभी कहानी तो कभी कविता की। लेकिन उसके छोटे भाई नयन को टी.वी. व मोबाईल की धुन थी। वह कभी टी. वी. देखते देखा जाता तो कभी मोबाईल पर वाट्सप पर लगा रहता। वह हमेशा बड़े भाई को पढ़ते देखता तो कुछ न कुछ कहे बिना नहीं रहता। कभी किताबी कीड़ा तो कभी महापंडित न जाने क्या–क्या कहा करता। एक दिन नयन कमरे में टी.वी. देख रहा था और बाहर चौक में नरेंद्र पुस्तक पढ रहा था। तभी अचानक बिजली गुम हो गई। टी.वी. बंद। नयन ने मोबाईल टटोला और देखा बेट्री बंद। तब वह बाहर आया। नरेंद्र के पास रखी पुस्तकों में से एक पुस्तक उठाई और पढ़ने लगा। एक कहानी पढ़ी और पढ़ने के बाद बोला वाह! क्या कहानी हैं। तब नरेंद्र ने कहा यह पुस्तकें बिजली के बिना देखी व पढ़ी जा सकती है। नयन चुप, कुछ ना बोला। एक दो कहानी पढ़ी तथा पुस्तक लेकर कमरे में चला गया। पुस्तक अलमारी में रख दी। आज उसके पास लगभग दो–तीन दर्जन पुस्तकें होगी।

–राजनगर (राजसमंद)

कूड़े का कमाल

–लक्ष्मीरूपल

महानगर की एक पौश कॉलोनी में दो बड़ी कोठियों के बीच में छोटी सी साझा दीवार थी। दोनों कोठियों की महिलाएं दीवार के इस पार, उस पार खड़ी होकर घंटों तक अपने–अपने सुख–दुःख और घर बाहर की बातें कर लिया करती थी। परंतु अवसर मिलते ही इस पार की कोठी के लोग चोरी–छिपे कभी रात के अंधेरे में अपने घर का कूड़ा छोटी दीवार के नीचे उस पार की कोठी में फेंक देते थे। धीरे–धीरे वहां पर कूड़े का अच्छा खासा ढेर जमा हो गया। आपसी संबंध खराब हो जाने के डर से पास का पड़ौसी कभी कुछ नहीं बोला। एक दिन पड़ौसी ने उस कूड़े के ढेर पर तोरी के बीज लापरवाही से डाल दिये। बरसात का मौसम आने पर तोरी के बीज उग गये और बेल खूब फैल गई। लंबी–लंबी तोरियों लटक गई। क्योंकि छिलकों से खाद का पोषण बेल को मिल गया। तोरियां इतनी लगी कि आस–पास के अनेक घरों में बांटी गई। एक दिन शाम के समय पड़ौसी स्वयं एक थैले में तोरियां लेकर इस पार की कोठी में आया। तोरियां देते हुए कहा–"बेल छत तक फैल गई है, यह तो आपके कूड़े का ही कमाल है।

–जीरकपुर (पंजाब)

परमार्थ

–डॉ. अंजना गर्ग

ओए वेद, क्या करता रहता है, सारा दिन हाथ में खुरपी और पानी का फव्वारा लिये घूमता रहता है। कभी हम लोगों के पास भी बैठ जाया कर। स्परूप सिंह ने वेद सिंह को टोका जो पौधों में पानी दे रहा था। बैठकर क्या करूंगा या तो फेफड़ों में धुंआ भरूंगा या पत्ते पर पत्ता फेकूंगा, वेदसिंह ने खुरपी से घास निकालते हुए कहा। बहुत काम कर लिया जवानी में, अब बुढ़ापे में आराम और मन की करले। एक दूसरा साथी दयासिंह बोला। मन की कर रहा हूँ। सड़क के दोनों किनारे हरे–भरे छायादार और फलों के पेड़ों से भर गये। तुम्हारे साथ बैठता तो तुम्हें न तो छाया मिलती, न ही ये नीम्बू जो तू झोली में ले जा रहा है। वेदसिंह ने उनकी तरफ देखकर कहा और अपने काम में लग गया। स्वरूपसिंह व दयासिंह ही नहीं, वहां बैठी उस मंडली के पास वेदसिंह की बात का कोई जवाब नहीं था। तब स्वरूपसिंह बोला, बात तो वेदसिंह ठीक ही केवै है, ताश और हुक्के में कुछ नहीं धरा, क्यों न हम भी गांव की भलाई के लिए कोई बीड़ा उठाये। सबकी आंखें में सहमति के भाव आ गये।

–रोहतक (हरियाणा)

दोहे

जितना भी करे प्रयास, बेकार न अब जाय,
पानी रोकने का हो, ऐसा कोई उपाय,
पानी– पानी हो गया, हरेक जन ही आज,
क्यों है पानी के लिए, आज वो मोहताज,

–रमेश मनोहरा, जावरा (म.प्र.)

लघुकथाएं

चर्चा, लूट की

– सन्तोष सुपेकर

'26 में भरेगा'

'नहीं 37 में भरेगा'

'मेरी मानो, 17 में भरेगा'

'अरे छोड़ो तुम्हारे 26,37 और 17, अपना दावा है कि 11 में ही भर जाएगा।'

'क्या बात है भईया?' चार सफेदपोशों को चौराहे पर इस तरह गर्मागर्म बहस करते देख सड़क पर खाना खा रहे एक गरीब से रहा न गया और पूछ बैठा, 'कौन हो आप लोग और क्यों झगड़ रहे हो?'

'अरे काका' सफेदपोशों में से एक ने ललचाई नजरों से गरीब को देखते हुए कहा, 'नहीं पहचाना? हम नेता हैं और आकलन कर रहे हैं तुम्हारी भोजन की थाली का कि गरीब का पेट कितने रूपए में भर जाता है।'

सुनते ही गरीब ने अपनी थाली उठाई और सरपट वहां से भागा।

बदले हुए रूप में

नदी के घाट पर वह बहुत बूढा आदमी कुछ ढूंढ रहा था।

''किसे ढूंढ रहे हैं आप? 'अव्यवस्था' ने प्रश्न किया।

''मैं......''तनिक संकोच से वृद्ध ने कहा, 'मैं वह घाट ढूंढ रहा हूं जहां शेर और बकरी एक साथ पानी पीते थे।''

''हा हा हा'' 'अव्यवस्था' ने अट्टहास किया और बोली, ''पहले तो एक ही होगा, अब तो ढेर सारे मिल जाएंगें, ऐसे घाट, जहां शेर और बकरी साथ–साथ होते हैं।''

''ढरे सारे! वो कहां?'' वृद्ध ने आंखें फैलाकर पूछा।

''यहां मत ढूंढों, चुनावों का वक्त है। जाओ, सुबह–सुबह रहवासी बस्तियों दरवाजों के पर देखो। तुम्हें मिल जाएंगे ऐसे ढेरों घाट और ढेरों शेर और बकरी, बदले हुए रूप में!''

उज्जैन (म.प्र.)



डॉ. ए.बी. सिंह को स्मृति चिन्ह प्रदान करते श्याम सुन्दर 'सुमन'

स्वास्थ्य

ताली बजाइए: सेहत बनाइए

– श्यामसुंदर गर्ग



ताली बजाने से सेहत बनाई जा सकती है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए ताली बजाने से सेहत संवरती है। ताली बजाएं, अपना खून गर्म रखें और अच्छे स्वास्थ्य का लाभ उठाएँ। हमारी संस्कृति में आरती के समय, भजन गाते समय तथा किसी समारोह में कोई खुशी और उत्साह वाली बात होती हैं, तो बजाते है ताली। ताली बजाकर जीवन के लिए खतरा बन चुके– हृदय रोग, मधुमेह, अवसाद, अस्थमा, गठिया, अनिद्रा, मोटापा आदि अनेक जटिल रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है। ताली बजाने से मानव शरीर मे रोग प्रतिरोधक शक्ति की वृद्धि होती है, जिससे शरीर रोगों के आक्रमण से बचने की क्षमता प्राप्त होती है। एक्युप्रेशर चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो हाथ की हथेलियों में शरीर के सभी आंतरिक उत्सर्जन संस्थानों के बिंदु होते हैं। ताली बजाने से जब इन बिंदुओं पर बार–बार दबाव पड़ता है तो सभी आंतरिक संस्थान उर्जा पाकर अपना काम सुचारू रूप से करते हैं, जिससे शरीर स्वस्थ और निरोगी बनाता है। ताली बजाने से शरीर की आंतरिक वसा कम होती है, जिससे मोटापा कम होता है। शरीर के विचार नष्ट होते हैं। वात, पित व कफ का संतुलन सही रहता है। ताली बजाने से खून का दौरा बढ़ता है। खून का दौरा बढ़ने कालस्ट्रोल के बुरे प्रभाव दूर होने के साथ ही, शिराओं व धमनियों की भी सफाई होती है।

ताली बजाना एक व्यायाम भी है। ताली बजाने से हमारे पूरी शरीर में खिंचाव होता है। जिससे शरीर की मांसपेशियां सक्रिय हो जाती हैं। जोर–जोर से ताली बजाने से कुछ ही देर में पसीना आने लगता है और पूरे शरीर में एक उत्तेजना पैदा हो जाती है। प्रतिदिन यदि नियमित रूप से कम से कम 10 मिनट ताली बजाएं तो किसी प्रकार के विशेष व्यायाम या आसनों की जरूरत नहीं रहती।

—संपादक शब्द सामयिकी,
पो.बॉ.नं.—60
भीलवाड़ा—311001

स्वास्थ्य

शाकाहारी के लिए अलसी बेहतर विकल्प

–अनोखीलाल कोठारी

अलसी एक ऐसा पौधा है जो सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। रोजाना अलसी के 1–2 चम्मच बीज खाने से कैंसर, हृदयरोग, डायबिटिज, जोड़ों का दर्द मोटापा, त्वचासंबंधी रोग पथरी, सर्दी–जुकाम, खांसी, अनिद्रा, कब्ज, बवासीर व मानसिक रोगों में लाभ होता है। अलसी एक दैनिक आयुर्वेदिक भोजन है, इसे आरोग्यवर्धक दिव्य आहार कहा जाता है। प्राचीन काल से हमारे ऋषि मुनि योग्यतम दैविक आहार व औषधियों के सेवन से सैकड़ों वर्ष तक जीवित रहते थे। अलसी का प्रयोग कपड़ा व रंग रोगन बनाने के लिए होता आया है। जब हमें फोड़ा–फुंसी हो जाते थे, तो अलसी का पुल्टिस बनाकर बांधते थे तो ठीक हो जाते थे।

अलसी लिगनेन का सबसे बड़ा स्रोत है। अलसी में लिगनेन, एंटीवैक्ट्रीयल, एंटी फंगल और कैंसर रोधी तत्व है। अलसी महिलाओं के कैंसर रजोनिवृत्ति के दौरान होने वाले परेशानियों जैसे हॉट फ्लोज, आस्ट्रीयोपोरोसिस आदि में बहुत बचाव करती है। लिगनने हमें प्रोस्टेट, बच्चेदानी, स्तन, आंत, त्वचा, कैंसर से बचाती है। यदि माँ के स्तन में दूध नहीं आ रहा है तो उसे अलसी खिलाने के 24 घण्टे की अवधि में महिलाओं के स्तन में दूध आने लगता है। यदि मां अलसी का सेवन करती है तो उसके दूध में ओमेगा–3 रहता है इससे बच्चा अधिक बुद्धिमान व स्वस्थ पैदा होता है। हमारे मन को शांत रखती है, चित प्रसन्न रहता है, विचार अच्छे आते हैं तनाव को दूर करता है। व्यक्ति में स्फूर्ति, चुस्ती तथा आत्मविश्वास बढ़ता है।



इससे तनाव आलस्य एवं क्रोध गायब हो जाता है। छः महीने तक अलसी के बीज का सेवन करने पर वजन काफी हद कम हो जायेगा। इसके सेवन से व्यक्ति के जीवन में यौवन की बहार, त्वचा में चमक आती है। जून के महीने में गर्मी नहीं लगती है। मन और शरीर में शीतलता बनी रहती है। छोटे बच्चों में होने वाली बीमारियों जैसे दस्त, एलर्जी, अस्थमा, नाक, कान, गले के इन्फेक्क्षण आदि बीमारी दूर होती हैं

पोषक तत्व–अलसी के बीजों को किसी भी मौसम में खा सकते हैं। इनमें विटामिन बी, कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम, आयरन, ओमेगा–3 हमारी शरीर में बनता है जो बाहरी स्रोतो से प्राप्त करना पड़ता है। अलसी के तेल को रात को सोते समय काजल की तरह आंखों में किसी भी प्रकार की एलर्जी होने पर उपयोग न करें। इसका तेल और बीज का एक साथ उपयोग न करे वर्ना गर्मी हो सकती है। अलसी के बीजों का उपयोग से चमत्कारी प्रभाव औषधीय गुणों से युक्त होकर कई एक बीमारियों में रोगों का उपचार होकर शाकाहारी व्यक्तियों के लिए बेहतर विकल्प है।

– उदयपुर (राज.)

लघुकथा

सन्तरे की फाँक

मालकिन के बच्चों के लिए संतरा छीलते वक्त ज्योंहि छिलका हटा सारी फांकें बिखर गई; लगा जुड़े रहने के लिए हल्का छिलके की तरह पर्दा जरूरी है। जैसे ही यह हट जाता है, सब बिखर जाता है। मेरे जीवन में भी तो बस। हल्का पर्दा–सा ही था, सबकुछ। हो गए ये सब अलग–अलग "संतरे की फांक" की तरह।

– रितेन्द्र अग्रवाल, जयपुर

सूचनार्थ

'शब्द सामयिकी' का आगामी अंक **'राष्ट्रभाषा' विशेषांक** होगा। रचनाएं एवं सहयोग **10 अगस्त 2016** तक आमंत्रित है।

– श्यामसुंदर सुमन, सं. 'शब्द सामयिकी',
पो.बा. नं. 60, भीलवाड़ा–311 001
मो. 94602 02217

समीक्षा

मूल्यों को तलाशतीं कविताएं

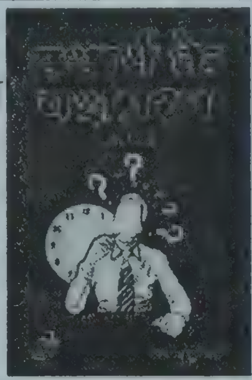
पुस्तक परिचय

काव्य–संग्रहः **यथार्थ के यक्षप्रश्न**

कविः **संतोष सुपेकर**

मूल्यः **दो सौ रूपये**

प्रकाशकः **अक्षरविन्यास, उज्जैन, म.प्र.।**



समय–काल–परिवेश–महौल की उपज होता है साहित्य। जो व्यक्ति इन सबको अपने अंदर महसूस करता और जीता है, वही इसे सलीके से कलमबद्ध कर पाता है और उसी के साथ होती है साहित्य–सृजन की शुरूआत। संतोष सुपेकर का दूसरा काव्य संग्रह 'यथार्थ के यक्षप्रश्न' भी एक ऐसा ही साहित्य है, जो आज के माहौल से अतीत का साक्षात्कार भी कराता है और भविष्य की और सार्थक इशारा भी करता है।

'यथार्थ के यक्षप्रश्न' में संग्रहीत कविताएं मानवप्राप्ति को पीछे नहीं धकेलतीं, बल्कि उस प्रगति में, उस मानवीय स्पर्श को अक्षत रखना चाहती हैं, जो मनुष्य की आंतरिक धरोहर है, मनुष्यत्व का संस्कार हे। ये कविताएं तकनीक और मानवीय रिश्तों को धुर–विरोधी प्रत्ययों के तौर पर नहीं देखती, बल्कि सभ्यता के तकनीकी रंगों और बदलावों में मानवीय संवेदनाओं के क्षरण को प्रश्नांकित करती हैं और विकास एवं प्राकृतिक संरक्षण में खास समीकरण को जीना चाहती हैं। दरअसल, 'यथार्थ के यक्षप्रश्न' इतिहास–बोध और इतिहास में वास्तविक मूल्यांकन पर सवाल खड़ा करता है।

संग्रह में शामिल कविताओं में धर्मांधता, कटते–झुलसते जंगलों की पर्यावरणीय चिंता, भोथरी होती जनसंवदेनाओं की धार, विलुप्त होते पशु–पक्षियों का किताबी चित्रों में पहचान पाते जाना, भूखे पेट से जुड़ा संवैधानिक मूल्यों का चिंतन, आदमी को पीड़ाओं से निकलने की अनदेखी कर उसकी फोटोग्राफी में संवेदनाओं को परोसना,गंवई पगडंडियों का महानगरीय तमाशों में बदलते जाना, दमित नारी के संघर्ष और उसका जीवटपन, अन्याय के विरोध ा में बुझे चेहरों के तमाशहीन बहाने, दौड़ती सड़कों की मृत्योन्मुखी गति, भ्रष्टाचार की जांच में उलझी अंतहीन न्याय प्रक्रिया, संकीर्णताओं में सिमटी और खानों में बंटी दुनिया, कस्बाईपन को लीलता शहरीकरण जैसे कई संवेदनशील पहलू इन कविताओं में सहजता और गंभीर वैचारिकता से उभरे हैं। कुछ कविताओं में नरमीले एहसास और स्पर्श हैं, तो वात्सल्य भरे मातृत्व की ऊष्मा भी है। स्वाभाविक रूप से कविताओं में सन्निहीत खासियतें कवि के सामाजिक सरोकार और बदलाव की आकांक्षाओं को अलग से रेखांकित करती हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि संवेदनाओं से भरी ये कविताएं सामाजिक संस्पर्शों के साथ शब्द संवदेना की मुख्य अभिव्यक्ति हैं।

समीक्षकःएस.नूपूर

लघुकथा

वसीयत

– सावित्री चौधरी

एक यहूदी अमीर सहसा बहुत बीमार पड़ गया। उसका बेटा किसी दूसरे शहर में गया था। उसका मुख्य गुलाम उसके सिरहाने खड़ा था। जब यहूदी मरने लगा, तो उसने वसीयत लिखवायी कि –'मेरी सारी जायदाद और जमा–पूंजी का मालिक मेरा गुलाम होगा, पर सारी सम्पत्ति में से कोई–सी भी एक चीज मेरा बेटा लौटकर ले सकेगा।'

गुलाम बहुत खुश हुआ और यहूदी के बेटा का लौटने का इंतजार करता रहा। जब यहूदी का बेटा लौटा, तब वह वसीयत सुनकर बहुत उदास हुआ और शहर के काजी के पास फरियाद लेकर पहुंचा।

काजी ने वसीयत सुनकर कहा, ''तुम्हारा बाप वाकई बहुत समझदार इंसान था। अब तुम सिर्फ एक चीज ले लो और वह चीज है–यह गुलाम।''

– जयपुर (राज.)

समाचार

मासिक काव्यगोष्ठी सम्पन्न



भीलवाड़ा। साहित्यिक उन्नयन को समर्पित संस्था सामयिकी की ओर से मासिक काव्य गोष्ठी का आयोजन सामयिकी कार्यालय, सुभाषनगर में किया गया। संस्था के नियामक वंशीलाल पारस, नरेंद्र दाधीच व प्रधान सचिव ओम उज्ज्वल ने मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर काव्य गोष्ठी का शुभारंभ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्यामसुंदर सुमन ने की। विशिष्टि अतिथि दीपक अग्रवाल (एसबीबीजे) व रविंद्र जैन थे। नरेंद्र दाधीच ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। एस.के. लोहानी 'खालिस ने संचालन करते हुए 'खुद की दुनियां में अजब गफलत, हो गई है, खुद से खुद की पहचान ही लुप्त हो गई है।' रचना सुनाकर दाद बटोरी। अरूण अजीव ने 'रंग बरसेगा, नूर बरसेगा, जयप्रकाश भाटिया ने 'आ.विरह की वेदना में तन हुआ बेहाल 'विरह गीत, अजीज जख्मी ने' भर आई क्यूं आंख जो मुझसे मेरा साया दूर रहा 'सुनाकर ऊंचाइयां प्रदान की। रेखा स्मित ने 'छोटे–छोटे काम भी लगते उनको भार, श्यामलाल शर्मा ने 'मानस जीवन अनमोल है तथा दीपक पारीक ने 'अगर एक भी कदम बढ़ाएं डर लगता है रचनाएं सुनाई, जिन्हें सराहागया। डॉ. कृष्णा माहेश्वरी, पुनीता भारद्वाज, डॉ. अवधेश कुमार जौहरी, आर.के. जैन, सुधा तिवाड़ी 'सखी', भंवर आर्य, चिरंजीलाल देशप्रेमी, दुलारा देवीलाल, वंशीलाल पारस, रामगोपाल जांगिड, नरेंद्र वर्मा, मनोहरलाल चंडालिया, उदयलाल सिंघवी, गोपाल पंचोली 'आशु', ओम उज्ज्वल, आदि ने अपनी बेहतरीन रचनाएं सुनाई।

काव्यगोष्ठी में वीरेंद्र लोढ़ा, महेश सेन व वत्सल ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। संस्था के अध्यक्ष श्यामसुंदर सुमन ने सभी का आभार ज्ञापित किया।





गोपाल पंचोली 'आशु' को लोककला मंचन संस्थान एवं रामजस सोडानी स्मृति संस्थान का प्रबुद्ध युवा रचनलाकार पुरस्कार प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि भ्रष्टाचार निरोधक विभाग के एडीशनल एस.पी. श्री राजेश गुप्ता व अतिथि गण।





श्रीमती पुनीता भारद्वाज एवं श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' को मुक्तक रत्न सम्मान प्रदान करते हुए।



डॉ. राजेन्द्र श्रीवास्तव को विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ के कुलाधिपति सुमन भाई विद्यावाचस्पति उपाधि प्रदान करते हुए।

आगामी आयोजन का अग्रिम आमंत्रण

24वाँ अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

15–16 अक्टूबर, 2016

स्थानः भागीरथ पब्लिक स्कूल सभागार, बी–ब्लाक, संजयनगर, सेक्टर–23, गाजियाबाद

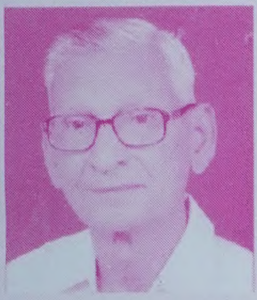
संगोष्ठियां, सांस्कृतिक संध्या, काव्य निशा, अ.भा. पत्र–पत्रिका पुस्तक प्रदर्शनी, पुस्तकों के लोकार्पण तथा राष्ट्रस्तरीय नामित सम्मान अलंकरण

आयोजक : राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास (पंजी.) सहयोगी : भागीरथ सेवा संस्थान

विवरण हेतु सम्पर्क करें : उमाशंकर मिश्र, अध्यक्ष, राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास

695, न्यू कोट गांव, जी.टी. रोड, गाजियाबाद – 201 009

शब्द सामयिकी के नये सदस्यों का स्वागत है


शांतिप्रकाश वाजपेयी


श्यामलाल शर्मा


पुनीता भारद्वाज


गोवर्धनलाल भट्ट


भंवरलाल शर्मा


आनन्द दीवान

शब्द सामयिकी के पर्यावरण विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं


डॉ. अंजना गर्ग
रोहतक


डॉ. मधुकान्त
रोहतक


दिनेश जैन
भीलवाड़ा


चिरंजीव देशप्रेमी
भीलवाड़ा


रामप्रसाद भदादा
भीलवाड़ा


डा. विष्णकुमार व्यास
गंगरार

लोकार्पण सम्पन्न



भीलवाड़ा। रेखा लोढ़ा 'स्मित' की दो कृतियाँ ''सीप'', कविता संग्रह एवं ''मुखर होता मौन'', गजल संग्रह का लोकार्पण कार्यक्रम डॉ. भगवती लाल व्यास, उदयपुर के मुख्य आतिथ्य एवं श्याम सुंदर जोशी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती को माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन व जयप्रकाश भाटिया 'सागर' की सरस्वती वंदना के साथ हुई। समारोह के विशिष्ट अतिथि तथा पुस्तक के प्रकाशक माया मृग ने कहा सीप होना, सर्वस्व दे डालना ही कविता है। विभा रश्मि ने लेखिका के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। गजलकार दिनेश सिंदल ने कवयित्री की गजलों को उद्धृत करते हुए कहा कि शब्द जब मौन हो जाए तब कविता प्रारंभ होती है। गजल में उपमा और रूपक से ज्यादा कथन महत्वपूर्ण होता है। उदयपुर के डॉ. जयप्रकाश पंडिया ज्योतिपुंज ने कहा कि कविता कभी गोद नहीं ली जा सकती है, यह तो सृजित होती है। कवि अब्दुल गफ्फार ने कविता व गजल संग्रह पर बधाई देते हुए देश प्रेम की ओजस्वी रचनाओं से कार्यक्रम को बुलंदियां प्रदान की। मुख्य अतिथि डॉ. भगवती लाल व्यास ने रेखा लोढ़ा स्मित की सुंदर रचनाओं पर बधाई देते हुए उनके शिल्प संयोजन पर प्रकाश डाला।

श्याम सुंदर जोशी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में रचनाओं की तारीफ करते हुए कहा कि रचनाओं में समाज व देश के हर समसामयिक पहलुओं को उजागर किया गया है। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. कमला कांत कमल ने किया। अतिथियों का स्वागत वीरेंद्र लोढ़ा ने मेवाड़ी पगड़ी व उपरना से किया। वत्सल लोढ़ा ने सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किया तथा सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। समारोह में भीलवाड़ा के प्रबुद्ध साहित्यकारों के साथ–साथ भीलवाड़ा शहर के विधायक विट्ठल शंकर अवस्थी ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

– वीरेन्द्र लोढ़ा

राजस्थानी दूहा

पर्यावरण



रूंख बचै, अण पशु बचै, बचै पाण की धार।
तो ही बचे मानखौ, बचे सकल संसार।।

कठै री वे बावड़ियां, कठै रिया तालाब।
हर मनख यो पूछ रियो, देसी कुणी जवाब।।

बिना रूंख धरती करी, देवे धरती शाप।
मार पगां कुल्हाड़ियां, मारे आपौ आप।।

कुरलाता पंछी उड़ै, कठे बणावे नीड़।
वे तो मौनी जीवड़ा, कुण समझेलो पीड़।।



कठे तो डूबै मानखौ, कठै काळ री मार।
हर प्राणी सुख सूं रहै, ऐसौ करौ विचार।

जल, जंगल अर जानवर, इणने रखो बचाय।
जदी बचेलो मानखौ, दूजो नहीं उपाय।।

रूंखा सूं बादल जुड़ै, बादल सूं जलधार।
हरी–भरी धरती करे, बरखा री मनवार।।

- श्याम सुंदर गर्ग

मुद्रित पुस्तक/धारा 121 डी के अन्तर्गत प्रेषण

संवाद सूत्र
श्यामसुन्दर गर्ग
पो. बॉक्स नं. 60
द्वारा मधुर कोरियर, गोलप्याऊ चौराहा,
भीलवाड़ा (राज.) 311001
मो. 094602–02217

प्रतिष्ठा में,